CEDSI
CENTRE OF EXCELLENCE FOR DAIRY SKILLS IN INDIA

+91 7428706078
info@cedsi.in

CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

मदर डेयरी ने दुग्ध और फल-सब्जी प्रसंस्करण संयंत्रों में 750 करोड़ रुपये निवेश करने की योजना बनाई है

दिल्ली-एनसीआर में मुख्य दूध आपूर्ति करने वाली मदर डेयरी ने अपनी दूध और फल-सब्जी (F&V) प्रसंस्करण क्षमताओं का विस्तार करने के लिए 750 करोड़ रुपये निवेश करने की योजना बनाई है। इस निवेश में दो नए संयंत्र स्थापित किए जाएंगे और मौजूदा सुविधाओं का विस्तार किया जाएगा।

महाराष्ट्र के नागपुर में एक बड़ा दुग्ध संयंत्र, जिसका लागत लगभग 525 करोड़ रुपये है, दिन में 600,000 से 10 लाख लीटर दूध प्रसंस्करण क्षमता होगी, जो केंद्रीय और दक्षिणी बाजारों को लक्ष्य बनाएगा। साथ ही, कर्नाटक में एक नया फल प्रसंस्करण संयंत्र, जिसमें 125 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश होगा, सफल ब्रांड के तहत काम करेगा।

ये निवेश मदर डेयरी की वितरण क्षमता को बढ़ाने और बढ़ती हुई उपभोक्ता मांग को पूरा करने की रणनीति का हिस्सा है। कंपनी नए संयंत्रों को दो साल के भीतर पूरा करने का लक्ष्य रखती है और पिछले वर्ष की चुनौतियों के बावजूद 2023-24 वित्तीय वर्ष में 7-8% की माध्यम वृद्धि दर की उम्मीद है।

तमिलनाडु ने दुग्ध डेयरी को अपग्रेड करने के लिए 30 करोड़ रुपये आवंटित किए

तमिलनाडु सरकार ने राज्य भर में छह आविन डेयरी प्लांट्स में स्वचालित दूध पैकिंग मशीनों की स्थापना के लिए 30 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इस पहल का उद्देश्य दूध पैकिंग का समय कम करना है, जिससे उपभोक्ताओं को दूध पहुंचाने में देरी कम हो।

इन निधियों को (नाबार्ड) - ग्रामीण बुनियादी ढांचा (आरआईडीएफ) योजना से लिया जाएगा, जिससे चेन्नई में शोलिंगनल्लुर, माधावरम, और अंबट्टुर में आविन डेयरी प्लांट्स को अपग्रेड किया जाएगा, साथ ही कोयंबटूर, तिरुची, और मदुरै में जिला सहकारी दूध उत्पादकों संघ के द्वारा परिचालित प्लांट्स को भी अपग्रेड किया जाएगा।

दूध और डेयरी विकास विभाग के एक अधिकारी ने इस परियोजना के लाभों को हाइलाइट किया, कहा कि स्वचालित पैकेजिंग सिस्टम मानव हस्तक्षेप को कम करेगा और पैकिंग प्रक्रिया को सुचारू बनाएगा। इस प्रोजेक्ट के लिए टेंडरिंग प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी।

बढ़ रही तापमान के खिलाफ केरल के डेयरी क्षेत्र को खतरा

केरल में बढ़ते हुए वायुमंडलीय तापमान दूध उत्पादन और उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं, हर एक डिग्री सेल्सियस तापमान बढ़ने पर हरेक डिग्री के लिए 5-10% की कमी के संभावित होने के साथ। इस स्थिति ने पूर्व-ग्रीष्मकालीन अवधि की तुलना में दूध उत्पादन में 30% की गिरावट का कारण बनाया है

जिससे खासकर 70% से अधिक महिलाओं की भागीदारी के कारण इस क्षेत्र की स्थिरता पर असर पड़ा है। जलवायु परिवर्तन, भूमि दबाव और पानी की कमी जैसे कारक इन चुनौतियों को और बढ़ाते हैं। इन प्रभावों का सामना करने के लिए, डॉ। टी.पी. सेथुमाधवन ने वैज्ञानिक ग्रीष्मकालीन प्रबंधन व्यवस्थाओं को लागू करने की सिफारिश की है

जिसमें उचित पानी की आपूर्ति, वायुशुद्धि, और स्वच्छ दूध उत्पादन शामिल हैं। मलबार मिलमा जैसी एजेंसियां डेयरी किसानों को अतिरिक्त प्रोत्साहन प्रदान कर रही हैं, जबकि केरल सरकार सेक्टर का समर्थन करने के लिए दूध छूटने के समय की अवधि बढ़ाने की सोच रही है।

केरल ने 'थेनमला कुल्लन' को संरक्षण के लिए स्थानीय नस्ल के रूप में पंजीकृत करने की योजना बनाई

केरल पशुपालन विभाग ने 'थेनमला कुल्लन' बौने गाय को स्थानीय नस्ल के रूप में पंजीकृत करने के लिए प्रयास करने की शुरुआत की है। ये गायें, जिनके छोटे ऊँचे की पहचान है और जो आरिप्पा और थेनमला में जनजातियों द्वारा पाली जाती हैं, जंगली चारा पर आधारित जीवन जीती हैं। विभाग इस नस्ल को संरक्षित करने का उद्देश्य लेकर आ रहा है, जो वर्तमान में अपने प्रारंभिक चरण में है, केरल पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (KVASU) के साथ अध्ययन करके।

मंत्री जे. चिंचुरानी ने परियोजना को उजागर किया, केरल की मौजूदा स्थानीय नस्लों में वेचुर और कासारगोड बौना भी शामिल है। ये गायें, प्रमुखतः अपने पुत्रों और खाद्य संरचना के लिए पाली जाती हैं, हालांकि कम मात्रा में पोषक A2 दूध उत्पन्न करने के बावजूद, स्थानीय स्थितियों में अच्छे से अनुकूलित हो गई हैं।

कोचारिप्पा और एडप्पाना जैसे कोलोनियों से पहचानी गई गायें मजबूत निर्माण और उच्च प्रतिरोध प्रदर्शित करती हैं, जो अपने हैंडलर्स के साथीदारी को अन्याय के प्रति पसंद करती हैं। पं

जीकरण प्रक्रिया में राष्ट्रीय पशु जीनेटिक संसाधनों के द्वारा विस्तृत मूल्यांकन, जैसे कि थर्मल सहिष्णुता और डीएनए के माध्यम से प्रतिरक्षा का विश्लेषण, शामिल है।

भारतीय शोधकर्ताओं द्वारा विकसित किफायती ठंडाक प्रणाली ने पशुओं की आरामदायकता और दूध उत्पादन में वृद्धि करने के लिए विकसित किया।

वल्लभ विद्यानगर के समुदाय विज्ञान केंद्र (सीएससी), सरदार पटेल विश्वविद्यालय (एसपीयू) से संबंधित, के शोधकर्ताओं ने पशुओं के लिए एक किफायती ठंडाक प्रणाली विकसित की है, जिसे भारत सरकार ने डिज़ाइन पेटेंट के रूप में पंजीकृत किया है। यह टाइमर-आधारित प्रणाली गर्मियों में पशुओं को गर्मी से राहत प्रदान करने का उद्देश्य रखती है

जिससे गर्मी से बचाव के लिए गर्मी के दौरान आने वाली चुम्बकीय दिक्कतों और सांस संबंधी समस्याओं से बचा जा सके, और दूध की उत्पादन और वसा की मात्रा में सुधार हो सके। पारंपरिक रूप से, गर्मियों में डेयरी उद्योग में कम बिक्री का समय होता है। महंगे पारंपरिक ठंडाक प्रणालियों की तुलना में, यह स्वदेशी समाधान केवल 5,000 से 10,000 रुपये में परिभाषित है और यह छोटे डेयरी किसानों के लिए उपयुक्त है जिनके पास एक से 12 पशुओं की डेरी है।

सीएससी के निदेशक विभा वैष्णव, विज्ञान संचारक चांदनी मारवाड़ी और परियोजना अधिकारी सोनल सोलंकी ने पशु पालकों के सामने आने वाली चुनौतियों का वैज्ञानिक समाधान प्रदान करने के लिए इस प्रणाली का विकास किया। वैष्णव ने ग्लोबल वार्मिंग के कारण बढ़ती हुई गर्मियों में पशुओं को आराम प्रदान करने के लिए एक समाधान की आवश्यकता पर जोर दिया। जबकि बड़े फार्म कॉस्टली स्प्रिंकलर प्रणालियों पर भरोसा करते हैं

पहले, छोटे डेयरी किसान अपने पशुओं को ठंडा रखने के लिए भीगी हुई बोरी या उन्हें एक बार दिन में नहलाने का उपयोग करते थे। यह नया प्रणाली लागत-कुशल और कुशल पशुओं को ठंडा रखने के तरीकों में एक महत्वपूर्ण उन्नति का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे पूरे देश में छोटे पैमाने पर पशु पालकों को लाभ मिलता है।

अमूल ने अपनी विश्वव्यापी मौजूदगी में विस्तार के लिए अमेरिका में ताजा दूध रेंज लॉन्च की है।

'भारत का स्वाद' के रूप में जानी जाने वाली अमूल ने अमेरिकी मार्केट में अपनी ताजा दूध रेंज का लॉन्च करके अपनी पहचान बनाई है, जिससे इस ब्रांड ने पहली बार भारत के बाहर इस उत्पाद को पेश किया है। यह कदम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान के बाद किया गया है जिन्होंने अमूल को दुनिया का सबसे बड़ा डेयरी बनने के लिए कहा था।

इस साझेदारी का परिणाम है गुजरात सहकारी दूध विपणन संघ (जीसीएमएमएफ) और मिशिगन मिल्क प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन (एमएमपीए) का साझा काम। एमएमपीए की 108वीं वार्षिक सम्मेलन में नोवी, मिशिगन, में घोषणा की गई इस साझेदारी ने अमूल के वैश्विक मौजूदगी में विस्तार की पुष्टि की है। इस रेंज में अमूल गोल्ड, अमूल शक्ति, अमूल ताजा, और अमूल स्लिम एन ट्रिम जैसे प्रसिद्ध प्रकार शामिल हैं, जो एक गैलन और आधे गैलन पैक में उपलब्ध होंगे।

यह रणनीतिक कदम भारतीय विदेशी मेले की मांग में गुणवत्ता वाले डेयरी उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लक्ष्य के साथ है। अमूल की योजना है कि वह अमेरिका में दही, छाछ और पनीर जैसे अन्य डेयरी उत्पादों को भी लॉन्च करेगा, जिससे यह विश्व के एक अग्रणी डेयरी नेता के रूप में अपनी पोजीशन को मजबूत करेगा।

मेथेन की चिंताओं के बीच, भारत के डेयरी क्षेत्र का परिसंवार्तन

भारत का डेयरी उद्योग, जो विश्व का सबसे बड़ा है, एक दोहरी चुनौती का सामना कर रहा है: 80 मिलियन किसानों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए, और इसके 303 मिलियन गाय-भैंसों से मेथेन उत्सर्जन को कम करने की चुनौती से। सरकारी प्रयासों के बावजूद, मेथेन कमीकरण का ध्यान अधिक जलवायु-संग्रहण पर है

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड जीनेटिक कार्यक्रमों के माध्यम से पशु पोषण में सुधार की पहल कर रहा है, जिसका उद्देश्य उत्पादकता को बढ़ाना और झुंडों को कम करना है। कृषि क्षेत्र में अन्य उपाय भी प्रभाव में हैं, जैसे खाद्य के रूप में फसल शेष और कम उत्सर्जन भैंसों के प्रोत्साहन।

हालांकि, अवसान बने हुए हैं, जैसे गुणवत्ता वाले चारे की कमी और वित्तीय प्रतिबंध। पशुचिकित्सकों का दावा है कि पोषणीय चारा को किसानों के लिए पहुंचने में सरकारी समर्थन की तत्परता है। किसी भी उत्सर्जन कमी के उपायों को किसानों की आजीविका को प्राथमिकता देना चाहिए और भारतीय कृषि में पशुओं की भूमिका को मान्यता देना जरूरी है।

जबकि भारत आर्थिक वृद्धि और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के बीच संतुलन ढूंढ़ता है, गायों के गोबर का उर्वरक के रूप में उपयोग जैसी पारंपरिक प्रथाओं को बनाए रखना महत्वपूर्ण है। ऊर्जा उत्पादन जैसे उच्च उत्सर्जन क्षेत्रों में निर्दिष्ट हस्तक्षेप भी महत्वपूर्ण हैं। अबिनाया तमिलारासु जैसे किसानों के लिए, उनकी गायों की कल्याणता सर्वोपरि है, जिससे एक सतत भविष्य के लिए किसान-पशु संबंध का महत्व बढ़ता है।

हम कौन हैं?

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया (सीईडीएसआई) "सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर एग्रीकल्चर स्किल्स इन इंडिया (सीईएएसआई)" के तहत काम कर रहा है, यह एक स्वायत्त संगठन है जो "**एग्रीकल्चर स्किल कौंसिल ऑफ़ इंडिया (ASCI)**" के तत्वावधान में काम कर रहा है। कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के संगठित और असंगठित क्षेत्रों में लगे किसानों, वेतनभोगी श्रमिकों, स्व-रोज़गार पेशेवरों, विस्तार श्रमिकों आदि के कौशल और क्षमता निर्माण के लिए **कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई**) के तहत काम करना।

सीईएएसआई कृषि के विभिन्न उप-क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्रों का एक शीर्ष संगठन है।

- सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया (सीईडीएसआई)
- सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर हॉर्टिकल्चर स्किल्स इन इंडिया (सीईएचएसआई)
- सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर फार्म मेकेनिज़शन स्किल्स इन इंडिया (सीईएफएमआई)

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं, नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

+91 7428706078

info@cedsi.in

www.cedsi.in Follow us on Facebook Cedsi Dairyskills Follow us on Twitter @CEDSI_India Follow us on Instagram @cedsi_india Follow us on linkedin Cedsi dairy COE

Centre of Excellence for Dairy Skills in India

Join Our Membership Drive and Get Benefits of

- Platform to interact with other members in the sector
- Networking opportunities with corporate leaders and government authorities
- Special costs of training in Skill India Certified Programmes
- Access to our Journal and Publications
- Expert advice in day-to-day operations and management of livestock /farm productions
- Free registration on the job portal and regular updates on job vacancies in the sector
- Recognize your organization with CEDSI Yearly Awards and Recognition
- Chance to reach across the board through advertising in our press releases, news and articles
- Consultative and advisory services to help members
- Consulting and advisory services to help members
- Periodic e-newsletter for the latest news, govt. announcement and schemes in dairy sectors
- Updates on training programs of CEDSI and access to the training calendar

Who Can Become a Member -

Corporates/ Cooperatives | NGO's/CSR Foundations | Dairy Farmers | Students | Professional

www.cedsi.in @cedsi_india

CEDSI : रविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक
- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय
- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी